छत्रपतीं शाहू महाराज और शिक्षा

डा किशोर उत्तमराव राऊत, समाजशास्त्र विभाग, संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावती ४४४६०२

प्रस्तावना

भारत मै कई राजे एव महाराजे, संत, महात्मे, सुधारक हूये जिन्होने समाज कि प्रगती एव उत्थान के लिये काम किया I इन सभी मै राजे I शाहू महाराज का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है I जिन्होने प्रारभ से ही समाज के सभी जाती,जमाती एव धर्म के लोगो के लिये काम किया I ब्रिटीश सत्ता होणे के बावजूद भी महाराज ने अपने संस्थान मै समाज सुधारने का काम किया वह बडा कदम है I जो अपने भारत वर्ष मै किसीने नही किया I इस सत्ता काळ मै सामान्य और दिन, दलित, अश्पृश्य लोगो के लिये बहुत प्रयास किये, उच्च लोगो का विरोध होते हुये भी इन मागास एव बहुजन लोगो के हित मै वह अपना कार्य करते रहे I उन कारनोसे ही उन्हे महाराष्ट्र मै ही नही तो देश मै एक प्रमुख समाजसुधारक माना जाता है I इतना नही तो महाराष्ट्र कि पहचान ही "फुले-शाहू-आंबेडकर" के नाम से होती है I इतना बडा काम शाहू महाराज का था I इन तीन महान सुधारक के कारण से इन राज्य एव देश का मान- सन्मान बडा I महाराष्ट्र यह संतो,महापूरुषो ,स्वत्रत सेनानी,समाज सुधाराक,एव मानव मुक्ती के लिये लढनेवालो कि भूमी है I इन भूमी मै ही मानवी विचारो के साथही प्रत्यक्ष कृती के माध्यमसेही विकास एव प्रगती के लिये काम करने वालो की भूमि नेही देश एव समाज विकास एव प्रगती मै शक्ती प्रदान कि है I समाज विकास एव प्रगती के सन्दर्भ जो भी घटना,प्रसंगो हूये वह महाराष्ट्र से संबधी है I राजश्री शाहू महाराज यह इसी भूमी के महान पुत्र है I उनका जन्म २६ जून १८७४ मी कंगाल मे हुआ, उनका नाम यशवंत और पिता का नाम जयसिंगराव (आप्पासाहेब) और मा का नाम राधाबाई था I कोल्हापूर संस्थान के चवथे राजे शिवाजी महाराज के जाने के पश्यात उनकी पत्नी आनंदीबाई ने १७ मार्च १८८४ मे गोद मै लिया और उनका नाम 'शाहू' रखा I उनको छत्रपती शाहू महाराज कहते थे I महाराज की पत्नी का नाम महाराणी लक्ष्मीबाई था I जो कि बडोदा के गुनाजीराव खानविलकर की पुत्री थी Iशाहू महाराज का २ एप्रिल १८९४ मै राज्याभिषेक समारभ हुआ इसके पश्यात २८ साल मै कोल्हापूर संस्थान के राजे थे I उनके संस्थान मे सभी जाती –धर्मो के लिये समता, स्वतंत्र, बंधुता ,सामाजिक न्याय और समान संधी दिलाने का काम शाहू महाराज ने किया I इसलीये उन्हे राजाओ का राजा कहा जाता है I अपना राज्य कारभारही अस्पृश ,मागास और बहुजन लोगो के उत्थान के लिये है I

छत्रपती शाहू महाराज और शिक्षा

शाहू महाराजने शिक्षा के क्षेत्र मै बहूत काम किया I राज्य मै पहिली बार स्कुली शिक्षा की सक्ती और मुफ्त कराई गई I समाज के पूर्ण रूप से उत्थान एव सर्वसमावेशक प्रगती के लिये 'शिक्षा' ही एक मात्र उपाय है I जाती भेद और अस्पृश्यता खत्म करणे के लिये उन्होने पहली बार उच्च एव अस्पृश्य बच्चे कि अलग अलग स्कूल बंद कर दिये और समान रूप से समानता की सुरवात की I महाराज ने की स्कूल एव वसतिगृह स्थापित करके चलाये I प्राथमिक स्कूल ,माध्यमिक स्कूल ,पुरोहित स्कूल, सरदार स्कूल, पाटील स्कूल, उद्योग स्कूल, संस्कृत स्कूल, सत्यशोधक स्कूल, सैनिक स्कूल, बालवीर स्कूल, डोंबारी स्कूल, कला स्कूल, आदि कि निर्माती करके सभी को पढने का समान अवसर दिया I

शाहू महाराज ने कई वसतिगृह स्थापन करके चलाये १) विक्टोरीया मराठा बोर्डिंग हाऊस(१९०१),२)दिगंबर जैन बोर्डिंग(१९०१),३) वीरशैव लिंगायत विद्यार्थी वसतिगृह(१९०६), मुस्लीम बोर्डिंग (१९०६),५) मिस क्लार्क होस्टेल (१९०८),६) दैवज्ञ शिक्षण समाज बोर्डिंग (१९०८),७) श्री नामदेव बोर्डिंग (१९०८),८) पांचाळ ब्राम्हण वसतिगृह (१९१२),९) श्रीमती सरस्व तीबाई गौड सारस्वत ब्राम्हण वसतिगृह (१९१५),१०)इंडिएन ख्रिश्चन होस्टेल (१९१५),११) कायस्थ प्रभू विद्यार्थी वसतिगृह(१९१५),१२)आर्य समाज गुरुकुल (१९१८),१३) वैश्य बोर्डिंग (१९१८),१४)ढोर चांभार बोर्डिंग (१९१९),१५)शिवाजी वैदिक विद्यालय वसतिगृह(१९२०),१६)श्री प्रिन्स शिवाजी मराठा बोर्डिंग हाउस (१९२०),१७)इंडिएन ख्रिश्चन होस्टेल(१९२१),१८)नाभिक विद्यार्थी वसतिगृह(१९२१),१९) सोमवंशीय आर्य क्षत्रिय बोर्डिंग (१९२०),२०)श्री देवांग बोर्डिंग (१९२०).२१)उदाजी मराठा वसतिगृह नाशिक (१९२०),२२चवथे शिवाजी महाराज मराठा वसतिगृह अहमदनगर (१९२०),२३)वंजारी समाज वसतिगृह नाशिक (१९२०),२४) चोखामेळा वसतिगृह नागपूर (१९२०),२५) छत्रपती ताराबाई मराठा बोर्डिंग पुणे (१९२०) (www.wikipedia .org) इस तऱ्ह १९१७ मै उनके संस्थान मै अनिवार्य एव मुफ्त शिक्षा का प्रावधान किया, राज्य मै १९० स्कूल, और ११.३९९ विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे I१९२२ मै ५९० स्कूल ,३१०९६ विधार्थी थे ,शिक्षा के लिये ६% अनुदान देते थे I शिक्षा संबधी वह अधिक जागरूक थे I

खुद महात्मा फुले के विचारो को आपनाते एव आदर्श मानकर महाराज ने काम किया I उनका शिक्षा संबधी दृष्टीकोण को स्पष्ट करता है वह कहते है कि ,

विद्या बिन गई मति ,मति बिन गई नीति,

नीति बिन गई गति ,गति बिन गया वित्त,

वित्त बिन चरमराये शुद्र , एक अविद्या ने किये इतने अनर्थ I

शिक्षा का प्रचार हेतू लगभग अठराह पाठशालाऐं खोली थी I जिसमे शुद्रा वर्गो के छात्र और महिला शिक्षा प्राप्त कर रही थी I महात्मा जोतीराव फुले चाहते थे कि शुद्राती शुद्र वर्ग के लोगो को इस प्रकार शिक्षा दी जाए कि वे अपनी सामाजिक समानता और वैयक्तीक स्वत्रतता के तैयार करके,देश एव समाज के विकास हेतू काम मे शिक्षा का महत्त्व है I सभी विकास कि जड शिक्षा हि है I उनके काळ मै शिक्षा क्षेत्र मै अधिक तर उच्च जातीके ही लोग हे थे I महात्मा फुले पहली बार सभी जाती- जमाती के छात्र कि पाठशालाए निर्माण करके उन्ही के लोगो को पठाने के लिये नियुक्त किये I शुद्राती शुद्र, गरीब, अज्ञान,एव सामान्य आदमी के सशक्तीकरण के लिये शिक्षा आवश्यक है I गाव एव देहांत लोगो के लिये मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिलणी चाहिये I समानता और समान अवसर का रास्ता शिक्षा से ही जाता है I समाज मै जाती व्यवस्था एव धर्म व्यवस्था इतनी मजबूत थी कि दलित, पिडीत,और मागास वर्गो को बहार निकालना मुश्कील था I महात्मा जोतीराव फुले के विचारो को स्वीकार करते हुये शाहू महाराज ने अपने राज्य कोल्हापुर संस्थान मै मराठा,जैन,लिंगायत, मुस्लीम,सुतार, नाभिक, महार, चांभार-ढोर आदि जाती एव जमाती के लिये स्कूल और वस्तीगृह निर्माण करके चालये I इतनाही नही तो महाराष्ट्र के कई भागो मै जैसे - नाशिक, पुणे, नगर, नागपूर आदि शहरो मै भी महाराज ने वस्तीगृह व स्कूल सुरु करके शेकडो लोगो को शिक्षा का अवसर प्राप्त करवाया I इस शिक्षा के कारण ही दलित, पिडीत एव मागास जाती एव जमाती के युवा वर्ग एव विद्यार्थी को शाषण एव प्रशासन मै जाने का अवसर मिला I इतना नही तो वैदिक स्कुलो की स्थापना की जिस मै सभी जाती और वर्गो के छात्र के लिये विज्ञान और संस्कृत शिक्षा भी दी I शिक्षा संबधी इतना संवेदनशील राजा दुसरा कोई नही है I प्राथमिक एव माध्यमिक स्कुली शिक्षा इतनी महत्वपूर्ण है की उसके उपर समाज रहता है ,इसलिये शाहू महाराज ने संस्थान के अलग –अलग क्षेत्र मै स्कूल स्थापित किये ,जिस मे संस्थान के मागास, दलित, पिडीत, विद्यार्थी शिक्षा का अवसर मिला I

शाहू महाराजने अपने राज्य मै २६ जुलाई १९०२ मै ५०% शासकीय क्षेत्र मै मागास वर्ग के लिये राखीव जगाए रखने का ऐंतिहासिक जाहीरनामा निकालकर देश मै नही तो दुनिया मे एक मिसाल कायम कर दि I इस काल मै डा बाबासाहेब आंबेडकर कि मुलाकात हुई दोने के बीच अस्पृश्य एव मागासवर्गो के लिये उन्होने सुधारात्मक काम मे एकमत हुआI उनके समाज उद्धार के किया काम के साथ ही मूकनायक पत्र के अनुदान दिया I परदेश शिक्षा के लिये आर्थिक अनुदान दिया I एक मागास एव अस्पृश्य जाती के डा बाबासाहेब को बहुत मदत कि जिनके कारण उनको अधिक काम करणे का अवसर दिलाया वह देश के महान नेता एव सुधारक बने I

शाहू महाराज शिक्षा संबधी बहुत क्रियाशील एव कृतीशील राज थे I जो काम कभी नही किया हुआ वह उन्होने अपने राज्य मै करके दिखाया I सभी जाती एव धर्मके प्रथा एव परंपरा का बोलबाल था I फिर भी अपने सुधार कि भावना एव मनोकामना रखने वाला, दुसरा राजा नाही है I अपने देश के लिये बहुत बडी बात है कि महाराज ने इतने कम समय मै सभी क्षेत्र मै महत्वपूर्ण काम किया I इतना काम और कोई राजा का नही है I

छात्र को केवल शिक्षा देने से काम नही होगा तो साथही तो उनके लिये उपयुक्त रोजगार दिलाने के लिये की कइ उपक्रम चलाये जिनके कारण इन छात्रो को रोजगार प्राप्त हुआ I रोजगार प्रदान करणे के लिये १९०६ मै बुनाई और स्पिनिग मिल सुरु किये,बाजार स्थान ,किसानो के लिये सहकारी समिती का गठन किया I समाज के सभी वर्गो के लिये महाराजने बहुत काम किया I अपने संस्थान को अधिक बलशाली और मजबूत बनाने मै उनका हर कदम समाज के उत्थान के लिये ही था I उन्होने कई परियोजना शुरू करके समाज को आत्मनिर्भर बनाने मै महत्वपूर्ण काम किया है I

समाज सुधारणा

समाज सुधारणा सम्बधी शाहू महाराज का योगदान बहुत बडा है I सामाजिक विषय के माध्यम सेही सभी वर्गो के लिये काम किया I जैसे दलित, पिडीत,अस्पृश्य, मागास सभी वर्गो के लिये काम किया I शिक्षा,धर्म, खेती,किसान, मजदूर सैनिक, आरक्षण, रोजगार आदि सभी क्षेत्र मै उन्होने ने काम किया I कृषी के क्षेत्र आधुनिकीकरण करणे के लीए उपकरण अपनाते हुये किसानो को क्रीडीत उपलब्ध कराये और किसानो को फसल उपज किसानो को सिखाने के लिया "राजा एडवड कृषी संस्थान" स्थापना की I कृषी,किसान ,मजदूर उनके महत्वपूर्ण विषय थे ,समाज की बहुसंख्य जनता इन क्षेत्र मै काम करती है

I उन्ही के कल्याण हेतू उन्होने काम किया I आत्मनिर्भर समाज के लिय उन्होने अपने संस्थान मै बहुत काम किया I अस्पृश्य के उत्थान के लिये महत्वपूर्ण काम 'शिक्षा' है वे कहते है की "अस्पृश्य लोगोने पुर्वापार चेले आये हूये कामो को न करते हुये,अच्छे और प्रतिष्ठीत कामो को अपनाने चाहिये, अस्पृश्य लोगोने अपनी उन्नती के किये मि.भीमराव आंबेडकर का उदाहरण सामने रखाना चाहीये I एसा कहकर इन समुदाय मै जोश पैदा करणे का काम किया I दलित, पिडीत और मागास लोगो के लिये समान हक्क एव अधिकार मिलना चाहिये I वह भी देश का नागरिक होने के नाते समानता का हकदार है I महाराज समाज संस्कृती के महान संरक्षक थे I संगीत कला, ललित कला, कलाकारो को प्रोत्साहन देते थे I समाज सुधार संबधी विचारो से शाहू महाराज बहुत जागरूक थे I समाज का भेदाभेद ,उच्च-नीचता,अश्पृश्यता नष्ट करणे के लिये डा बाबासाहेब आंबेडकर और शाहू महाराज मै कई बार मुलाकात हुई परिणाम स्वरूप २१-२२- १९२० मै एक संमेलन का आयोजन किया इस संमेलन के डा बाबासाहेब आंबेडकर अध्यक्ष थे I इस सभा मै शाहू महाराज ने महत्वपूर्ण मार्गदर्शन किया कि डा बाबासाहेब आंबेडकर ही इन अस्पृश्य और मागास समाज को आगे ला सकते है Iहव ह आपका नेता है,सभी ने उनके मार्गदर्शन मै एक साथ खडे होना चाहिये I उनके कई आंदोलन को बल दिया I

महिला संबधी १९१७ विधवा पुर्नविवाह को वैध बनाया I साथ ही बाल विवाह रोकने का प्रयास किया Iसमाज के उत्थान एव प्रगती के लिय काम करनेवाला महान राजा,सामाजिक सुधारक छत्रपती शाहूजी महाराज की मृत्यु 6 मई 1922 मे हुई थी।

सारांश

छत्रपती शाहू महाराज अपने संस्थान मै समाज सुधारने संबधी बहुत काम किया I जो कि अन्य किसेने नही किया I अपने राज्य मै सभी जाती, जमाती एव धर्मो के लिये स्कूल एव वसतिगृह स्थापित करके चलाये I जिसके फल स्वरूप हजारो छात्रो को फायदा हुवा,जो आज अपने पैरो पर खडे होकार समाज और देश की सेवा कर रह है I मागास लोगो के किये शिक्षा का महत्त्वपूर्ण काम किया I शिक्षा संबधी इतना कृतीशील एव सवेदनशील लोक राजा दुसरा नही है I

संदर्भ

१) राजर्षी शाहू गौरव ग्रंथ : शिक्षण व सेवायोजन विभाग महाराष्ट्र राज्य मंत्रालय मुंबई १९८८

२) मुरलीधर जगताप (१९९३): युगपुरुष महात्मा फुले ,(निर्माण प्रबध-हरी नरके) ,महात्मा फुले, चरित्र साधने प्रकाशन समिती महाराष्ट्र शाषण, द्वारा शिक्षा विभाग मंत्रालय मुंबई

३) हरी नरके (संपादक) (१९९३): महात्मा फुले : साहित्य और विचार,महात्मा फुले चरित्र साधने प्रकाशन समिती महाराष्ट्र शासन ,द्वारा उच्च व तंत्र शिक्षा विभाग मंत्रालय मुंबई४०००३२

४) https://wikipedia.org

५) https// free Wikipediashahumaharaj.org